بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-20.10.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण पुनः विशेष दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 20 अक्तूबर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज भी बदर के तुरन्त बाद घटित होने वाले वृत्तांत का वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के हवाले से बयान करूँगा।

इतिहास में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद अबुलआस के इस्लाम क़बूल करने की घटना लिखी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमादिल ऊला छः हिजरी में ज़ैद बिन हारसा रज़ी. के नेतृत्व में सत्तर सहाबियों के साथ एक अभियान अमीस नामक स्थान की ओर रवाना फ़रमाया। अमीस मदीने से चार दिनों की यात्रा की दूरी पर है। यह दिनों की यात्रा का जब वर्णन होता है तो इतिहासकार यह कहते हैं कि एक दिन की यात्रा बारह मील होती है। इस तरह यह स्थान अड़तालीस मील की दूरी पर स्थित था। इस अभियान का कुछ विवरण यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली थी कि शाम देश की ओर से मक्का के क़ुरैशियों का एक दल आ रहा है तथा इस दल के व्यवसायिक सामान का उद्देश्य मुसलमानों पर हमला तथा युद्ध का था। अतएव उन्होंने इसको रोक लिया, सामग्री तथा अन्य सामान क़ब्ज़े में ले लिया तथा कुछ बन्दी भी पकड़े जिनमें अबुलआस रज़ी. भी शामिल थे।

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि अमीस नामक अभियान के क़ैदियों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद अबुलआस भी थे जा स्वर्गवासी हज़रत ख़दीजा रज़ी. के निकटवर्ती रिश्तेदारों में से थे और अभी शिर्क पर क़ायम थे। अबुलआस ने किसी तरह हज़रत ज़ैनब रज़ी. को अपने क़ैदी होने की सूचना भिजवा दी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप स. के सहाबी सुबह की नमाज़ में व्यस्त थे तो हज़रत ज़ैनब रज़ी. ने उच्च स्वर में पुकार कर कहा कि

ऐ मुसलमानो! मैंने अबुलआस को शरण दी है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पूरी करके सहाबियों को फ़रमाया कि जो ज़ैनब ने कहा, आप लोगों ने सुन लिया होगा, वल्लाह मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। मोमिनों की जमाअत में से कोई किसी काफ़िर को शरण दे तो उसका आदर करना अनिवार्य है। फिर आप स. ने ज़ैनब रज़ी. को फ़रमाया कि जिसे तुमने शरण दी है उसे हम भी शरण देते हैं और अबुलआस का धन उसे वापस लौटा दिया तथा ज़ैनब रज़ी. को अबुलआस की सेवा करने तथा खिलाने पिलाने का निर्देश फ़रमाया तथा उससे अकेले में मिलने से मना फ़रमाया। कुछ दिन बाद अबुलआस ने मक्का वापस जाकर अपने व्यापारिक लेन देन साफ़ किए तथा वापस आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहुंच कर मुसलमान हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ी. को बिना किसी नए निकाह के उनकी तरफ़ लौटा दिया।

इससे यह फ़त्वा भी मिल गया कि यदि कोई महिला अपने पति के काफ़िर हो जाने के कारण अलग होती है तो पति के ईमान लाने के बाद दोबारा निकाह करने की आवश्यकता नहीं होती। हज़रत ज़ैनब रज़ी. अपने पति के इस्लाम लाने के बाद अधिक समय तक जीवित नहीं रहीं तथा आठ हिजरी में उनका देहान्त हो गया। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ी, हज़रत सौदा रज़ी, हज़रत उम्मे सलमा रज़ो. तथा हज़रत उम्मे अतिया रज़ी. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायत के अनुसार उन्हें स्नान दिया जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई तथा स्वयं क़ब्र में उतर कर उन्हें दफ़न किया। हज़रत अबुलआस रज़ी. भी इसके बाद अधिक समय तक जोवित न रहे तथा बारह हिजरी में निधन हो गया।

सुवेक़ नामक युद्ध दो हिजरी जुलहिज्जा में हुआ जिसका कारण यह है कि जब मुशरिक पराजित होकर तथा शोक पूर्ण मक्का की ओर आए तो अबू सुफ़यान ने अपने ऊपर तेल लगाना हराम कर लिया तथा मनौती मानी कि वह स्नान नहीं करेगा, यहाँ तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप स. के सहाबियों से बदर की लड़ाई का बदला न ले ले। एक रिवायत के अनुसार अबू सुफ़यान दो सौ सवारों के साथ, जबकि दूसरी रिवायत के अनुसार चालीस सवारों को लेकर अपनी शपथ पूरी करने के लिए निकला तथा मदीने के निकट पहुंच कर सहायता प्राप्त करने के लिए बनू नज़ीर नामक क़बीले के ह्यी बिन अख़तब नामक व्यक्ति के पास गया जिसने इंकार कर दिया। फिर वह सलाम बिन मशकम के पास गया जिसने मुसलमानों में भेद की बातें बताईं तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिदिन की व्यस्तता बताई। अबू सुफ़यान ने क़ुरैश के कुछ लोगों को मदीने से तीन मील की दूरी पर एक नख़लिस्तान की अरीज़ नामक घाटी में भेजा, जहाँ उन्होंने खजूरों के झुण्ड जला दिए तथा एक मुसलमान अंसारी की हत्या कर दी। अबू सुफ़यान ने इस सफलता को अपनी शपथ का पूरा होना समझा तथा अपनी सेना लेकर मक्का की ओर रवाना हो गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसका पता चला तो दो सौ सहाबियों के साथ उसका पीछा करने के लिए निकले तथा क़ुरक़ुर्रतुलकदर पहुंच गए। अबू सुफ़यान तथा उसकी सेना भागते हुए सत्तू के थैले फेंकते जा रहे थे तथा मुसलमान उनको उठाते जा रहे थे, इस लिए इस युद्ध का नाम सुवेक की लड़ाई अर्थात सत्तुओं वाला युद्ध पड़ गया। अबू सुफ़यान तथा उसकी सेना भाग गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस आ गए तथा सहाबियों के पूछने पर फ़रमाया कि यह युद्ध ही है।

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने पहली ईदुज़्ज़ुहा के बारे में लिखा है कि उसी साल ज़िलहिज्जह में दूसरी इस्लामी ईद अर्थात ईदुज़्ज़ुहा अनिवार्य हुई जो ज़ुलहिज्जा के महीने की दसवीं तारीख़ को पूरी इस्लामी दुनिया में मनाई जाती है। इस ईद में हरएक समर्थ मुसलमान के लिए आवश्यक है कि किसी पशु की बलि देकर उसका मांस अपने परिजनों, दोस्तों, पड़ौसियों तथा अन्य लोगों में बाँटे तथा स्वयं भी खाए। अतः ईदुज़्ज़ुहा के दिन तथा उसके बाद दो दिन तक इस्लामी दुनिया में लाखों करोड़ों जानवर अल्लाह के लिए क़ुर्बान किए जाते हैं और हज़रत इब्राहीम अलै, हज़रत इसमाईल अलै तथा हज़रत हाजरा अलै. के महान बलिदान की याद का जीवित रखा जाता है तथा जिसका सर्वोत्तम उदाहरण आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन था। हर एक मुसलमान को सचेत किया जाता है कि वह भी अपने आक़ा व मौला के लिए अपना जीवन तथा धन एवं अपनी हर एक चीज़ क़ुर्बान करने के लिए तय्यार रहे। यह ईद भी ईदुल फ़ित्र की भांति एक महामान्य इबादत अर्थात हज के पूरा होने पर मनाई जाती है।

हज़रत फ़ातमा रज़ी. का निकाह भी दो हिजरी में हुआ। हज़रत अनस रज़ी. बयान करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. दोनों ने हज़रत फ़ातमा रज़ी. से शादी का निवेदन किया किन्तु रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चुप रहे तथा कोई उत्तर न दिया। हज़रत अली रज़ी. बयान करते हैं कि मैं आप स. की सेवा में उपस्थित हुआ तथा निवेदन पूर्वक कहा कि आप स. हज़रत फ़ातमा की शादी मुझ से करेंगे? आप स. ने फ़रमाया- क्या तुम्हारे पास महर के लिए कुछ है? मैंने कहा कि मेर पास घोड़ा तथा युद्ध कवच है। आप स. ने फ़रमाया कि घोड़ा अनिवार्य है परन्तु कवच को बेच दो। अतः मैंने 480 दर्हम में अपने युद्ध कवच को बेच कर मेहर की धन राशि का प्रबन्ध किया। आप स. ने इस धन राशि में से मुट्ठी भर बिलाल को देत हुए फ़रमाया कि इससे कुछ सुगन्ध ख़रीद लाओ तथा कुछ लोगों को इरशाद फ़रमाया कि हज़रत फ़ातमा रज़ी. का दहेज तय्यार करो। अतः हज़रत फ़ातमा रज़ी. के लिए एक चारपाई, चमड़े का एक तकिया जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, तय्यार किया गया।

एक रिवायत में है कि आप स. ने हज़रत अली रज़ी. से यह रिशता करते हुए फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझे ऐसा करने का आदेश दिया। बिदाई के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बर्तन में वज़ू किया फिर वह पानी हज़रत फ़ातमा रज़ी. तथा हज़रत अली रज़ी. पर ये शब्द फ़रमाते हुए छिड़का कि- اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِمَا وَبَارِكْ عَلَيْهِمَا وَبَارِكْ لَهُمَا فِىْ نَسْلِهِمَا अर्थात- ऐ मेरे अल्लाह ! तू इन दोनों के आपस के सम्बंधों में बरकत दे तथा इनके उन सम्बंधों में बरकत दे जो दूसरे लोगों के साथ क़ायम हों तथा इनकी नस्ल में बरकत दे। यह दुआ शादी करने वाले जोड़ों के लिए उनके माँ-बाप को भी करनी चाहिए। आजकल दुनिया के लालच के कारण शादी के बाद लड़के तथा लड़की के बीच समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनमें बढ़ौतरी भी हो रही है यदि दीन को प्रमुखता दी जाए तथा इस तरह दुआ की जाए एवं वालदैन भी अपनी भूमिका इस तरह अदा करें तो रिशते क़ायम रह सकते हैं।

शादी के बाद एक निष्ठावान सहाबी हज़रत हारसा बिन न्अमान अन्सारी रज़ी. ने अनुग्रह के साथ अपना एक मकान ख़ाली करवा कर हज़रत अली रज़ी. तथा हज़रत फ़ातमा रज़ी. के रहने के लिए पेश कर दिया था। हज़रत फ़ातमा रज़ी. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चक्की चलाने के कारण हाथ में पीड़ा

बताकर किसी सेवक का प्रबन्ध करने को कहा तो आप स. ने हज़रत अली रज़ी. और हज़रत फ़ातमा रज़ी. को फ़रमाया कि जब तुम अपने बिस्तर पर लेटो तो चौंतीस बार अल्लाहु अकबर कहो, तेंतीस बार सुबहानल्लाह कहो तथा तेंतीस बार अलहम्दुलिल्लाह कहो, ये तुम दोनों के लिए सेवक से अच्छा है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सेवक को उलब्ध कराना कठिन न था परन्तु सम्भवतः कि लोग कुछ की कुछ बात बना लेते तथा बादशाह इन सम्पत्तियों को अपने लिए वैध समझ लेते। अतः सावधानी की दृष्टि से आप स. ने अपने पास बांटने के लिए आने वाले ग़ुलाम एवं सेविकाओं में से कुछ न दिया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा, इस समय मैं दोबारा दुनिया के हालात के विषय में दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ। अब तो पश्चिमी दुनिया बल्कि अमरीका के भी कुछ लिखने वालों ने समाचार पत्रों में यह लिखा है कि बदले की भी कोई सीमा होनी चाहिए तथा अमरीका एवं पश्चिमी देशों को हम्मास एवं इसराईल के युद्ध में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए और सन्धि एवं युद्ध विराम की चेष्टा करनी चाहिए परन्तु लगता है, लिखने वाले यह भी लिखते हैं कि लगता है ये लोग युद्ध विराम के बजाए युद्ध को भड़काने पर तुले हुए हैं। इसी तरह अमरीका को कल ख़बर थी कि विदेश मंत्रालय के एक बड़े अफ़सर ने इस बात पर त्याग दे दिया कि अब सीमा पार हो चुकी है, फ़लिस्तीनी निर्दोषों पर अत्यधिक अत्याचार हो रहा है और इसकी ओर ध्यान करना चाहिए बड़ी शक्तियों को, तो इन लोगों में सज्जन लोग भी मौजूद हैं। इसी तरह कई बार मीडिया पर आता है, कुछ यहूदी रब्बाई भी उनके हक़ में तथा अत्याचार के विरुद्ध बोल रहे हैं। रूस के विदेश मंत्री ने भी बयान दिया है कि यदि इसी प्रकार ये देश अपना व्यवहार रखे रहे तो यह युद्ध पूरे क्षेत्र में फैल जाएगा, बल्कि मैं समझता हूँ कि पूरी दुनिया में फैल जाएगा। अतः होश के नाख़ून इन लोगों को लेने चाहिएँ, इसी तरह मुस्लिम देशों को जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, एक होकर तथा एक आवाज़ होकर बोलना चाहिए। यदि दुनिया के तरेप्पन चव्वन देश कहे जाते हैं मुसलमान हैं, एक आवाज़ में बोलें तो यह बड़ी शक्ति होगी तथा इसका प्रभाव भी होगा फिर, अन्यथा इक्का दुक्का आवाज़ें जो हैं कोई प्रभाव नहीं रखतीं तथा यही एक तरीक़ा है दुनिया में शांति स्थापित करने का तथा इस युद्ध को समाप्त करने का। अतः मुस्लिम देशों को दुनिया को विनाश से बचाने के लिए अपनी भूमिका निभाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला इनको तौफ़ीक़ भी दे इसकी। किन्तु हमें दुआओं पर ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला इस युद्ध को भी समाप्त करे तथा निर्दोष पीड़ित फ़लिस्तीनियों की रक्षा फ़रमाए, और अधिक उन पर अत्याचार न हों तथा अत्याचार को विश्व से समाप्त करे जहाँ भी है अत्याचार, अल्लाह तआला हमें दुआओं की तौफ़ीक़ दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131